41

युद्ध लगा हुआ है!

(12:6, 13-17)

युद्ध लगा हुआ है: गोलियां चल रही हैं, बम फूट रहे हैं और लाशों की गंध वातावरण में फैली हुई है। अचानक सादे कपड़े पहने एक आदमी समाचार पत्र पढ़ने में व्यस्त वहां आ जाता है। अपने आसपास से अनजान वह युद्ध के मैदान के बीच में चहल कदमी करता हुआ सीधे वहां पहुंच जाता है, जहां लड़ाई हो रही है। यदि उसे पता न चले कि क्या हो रहा है तो वह मर ही जाएगा। यदि हम ऐसा दृश्य देखें तो हम यही पुकार उठेंगे, ''तुम्हें पता नहीं कि लड़ाई लगी हुई है?'' बहुत से लोग एक भयंकर लड़ाई के बीच में जो उस लड़ाई से बड़ी है, जिसमें केवल ''शरीर को घात'' किया जा सकता है (मत्ती 10:28) अनजाने में जीवन के बीच में मटर-गश्ती कर रहे हैं।

पौलुस ने तीमुथियुस को ''विश्वास की अच्छी कुश्ती'' लड़ने (1 तीमुथियुस 6:12) और ''मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान ... दुख'' उठाने को कहा (2 तीमुथियुस 2:3)। इफिसियों को उसने बताया, ''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं'' (इफिसियों 6:12)। 12:13-17 में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उस युद्ध के विषय में बताती है जिसे हम लड़ रहे हैं। हम पढ़ते हैं, ''और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया'' (12:17)।

पिछले पाठ में हमने 12:7-12 पर चर्चा की थी, जिसमें ''मेमने के लोहू के कारण'' (आयत 11) शैतान की हुई पराजय बताई गई थी। इस पराजय में शैतान को ''पृथ्वी पर गिरा दिया गया'' था (आयत 9): उसका अधिकार कम कर दिया गया था। विशेषकर भाइयों पर आरोप लगाने की उसकी शक्ति छीन ली गई थी। इस पाठ में बताया जाएगा कि शैतान की पराजय से कैसे उसकी स्थिति प्रभावित हुई, इसमें परमेश्वर के लोगों पर चल रहे शैतान के निरन्तर युद्ध की व्याख्या भी मिलेगी। व्यक्तिगत तौर पर यह अध्ययन स्पष्ट कर देगा कि शैतान *आप से* घृणा क्यों करता है और *आपको* नष्ट करने की कोशिश क्यों कर रहा है। इसमें उसके भीषण आक्रमणों से बचने की सिफारिशें भी दी जाएंगी।

युद्ध जिसे शैतान कभी जीत नहीं सकता (12:6, 13-16)

इन पदों का आरम्भ उस युद्ध से होता है, जिसे शैतान कभी जीत नहीं सकता।

सताव (आयत 13)

''और जब अजगर ने देखा, कि मैं पृथ्वी पर गिरा दिया गया हूं, तो उस स्त्री को जो बेटा जनी थी, सताया'' (आयत 13)। (अजगर के स्त्री को सताने का चित्र देख।) पिछले एक पाठ में हमने सुझाव दिया था कि स्त्री पुराने और नये दोनों नियमों अर्थात दोनों वाचाओं में परमेश्वर के इस्राएल को कहा गया है।[1] अध्याय 12 के पहले भाग में स्त्री सांसारिक इस्राएल है। अध्याय के पिछले भाग में स्त्री आत्मिक इस्राएल, या यूं कहें कि कलीसिया है। इस कारण आयत 13 शैतान द्वारा कलीसिया के सताव अर्थात उस सताव की पुष्टि करती है, जो यूहन्ना के समय आरम्भ हो कर उससे भी भयंकर होने वाला था (2:10, 13; 3:10; 6:9-11)।[2]

सुरक्षा (आयतें 6, 14-16)

12:1-4 पर दृष्टि करते हुए, अजगर और स्त्री के आकार और शक्ति में अन्तर पर विचार करें। स्त्री को इस विराट पशु के आक्रमण से बचने की कोई आशा नहीं थी। फिर परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। आयत 6 में हम पहले ही देख चुके हैं, जिसमें कहा गया है कि ''स्त्री उस जंगल को भाग गई, जहां परमेश्वर की ओर से उसके लिए एक जगह तैयार की गई थी।'' आयत 14 कुछ और विवरण जोड़ती है: ''और उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए कि सांप के सामने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुंच जाए, जहां वह एक समय, और समयों, और आधे समय तक पाली जाए।''

अध्याय 12 में कुछ असाधारण यादगारी घटनाएं हैं। यह उन्हीं में से एक है। कुछ पल के लिए अपने आप को गर्भवती स्त्री की जगह होने की कल्पना करें। आपको जनने की पीड़ा लगी हुई है और अजगर बच्चे को खाने को तैयार है; परन्तु उस पशु द्वारा शिशु को खाने के लिए झपटने पर बच्चा ऊंचा उड़कर बादलों में से होते हुए स्वर्ग में चला जाता है। आगे पीछे कई सिरों और आप पर लगी कई आंखों वाला वह पशु रेंगते हुए आपके करीब आने लगता है, जब तक आपको उसकी गंदी उपस्थिति की गंध नहीं आती और उसके गरम सांस का अहसास नहीं होता। थके हुए और असहाय आप अपना बचाव कैसे कर सकते हैं?

फिर एक अनोखी बात होती है: आपके कंधों के बीच में एक झुनझुनी सी आती है। मुड़कर कंधे के ऊपर देखने पर आप अपने पीछे से मज़बूत, उकाब जैसे पंखों वाले भव्य पंख निकलते देखते हैं! संकोच से आपके कंधों की मांस पेशियां खिंच जाती हैं, जिससे पंख फैल जाते हैं। आप मांसपेशियों को ढीला कर देते हैं और पंख इकट्ठे हो जाते हैं। तभी वह विराट पशु झपटता है। फुर्ती से आप अपने पंखों को फैलाकर ऊपर को उछलते हैं। एक पल के लिए आप को लगता है कि आप उसकी पकड़ में आ जाएंगे, परन्तु फिर आप उड़ने

लगते हैं! अपनी बड़ी पूंछ के साथ वह अजगर आपको वैसे ही आकाश से नीचे खींचने की कोशिश करता है जैसे उसने एक तिहाई तारों को गिराया था (12:4), परन्तु आप उसकी पहुंच से बहुत ऊंचा चले जाते हैं। नये पंखों से फड़फड़ाते हुए आप उस आश्रय की ओर बढ़ते हैं। क्या परमेश्वर की सुरक्षा और प्रबन्ध के चित्रण के लिए यह चौंकाने वाले वचन नहीं हैं?

प्रकाशितवाक्य के अधिकतर संकेतों की तरह आयत 14 की वाक्य रचना इस्राएलिएयों के मिस्र से छुटकारे से ली गई है।[3] उस छुटकारे की बात करते हुए परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा था, ''तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो *उकाब पक्षी के पंखों पर* चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं'' (निर्गमन 19:4)।[4] अपने लोगों को ''उकाबों के पंखों'' पर चढ़ाकर परमेश्वर उन्हें जंगल में ले आया (भजनसंहिता 78:52) वैसे ही स्त्री बचकर उसके लिए तैयार किए जंगल में चली गई।

यहूदियों के जंगल में घूमने से परिचित लोगों के मनों में ''जंगल'' शब्द सुनने पर कितनी ही बातें आ गई होंगी। निर्गमन से जुड़े जंगल पर विचार करने के लिए कुछ क्षण निकालें:[5] (1) यहां रहना आसान नहीं था। झुलसा देने वाली तीखी धूप और ज़हरीले जीवों के झुण्डों की भरमार थी। (2) परन्तु जंगल में लोग *स्वतन्त्र* थे, मिस्री दासता से स्वतन्त्र। (3) वहीं पर आग के खम्भे के साथ परमेश्वर ने उनकी अगुआई की और उन्हें उनके शत्रुओं से बचाया था (देखें होशे 13:5)। (4) विशेष महत्व इस बात का है कि वहां परमेश्वर ने उन्हें ''पाला'': प्रति दिन वह आकाश से उनके लिए मन्ना का प्रबन्ध करता (निर्गमन 16:4) और बीच-बीच में बटेर भी देता था। आवश्यकता पड़ने पर उसने उन्हें पानी भी दिया। (5) जंगल की यात्रा कभी समाप्त नहीं होने वाली थी; यह तो केवल प्रतिज्ञा किए हुए देश के रास्ते में थी।

उस जंगल और अध्याय 12 वाले जंगल में समानताएं देखना आसान है: (1) स्त्री की समस्याएं यही नहीं थीं कि वह जंगल में थी। आयत 14 इस बात पर ज़ोर देती है कि वह वहां ''एक समय और समयों और आधे समय'' के लिए थी,[6] जबकि आयत 6 अधिक परिचित वाक्यांश ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन'' का इस्तेमाल करती है। जैसा कि हमने ज़ोर दिया है, ये संख्याएं 3-1/2 वर्ष को दर्शाती हैं, ''3-1/2'' परीक्षा, कठिनाई और परख से जुड़ी संख्या है। स्त्री के जंगल में होने पर भी अजगर ने उसे नष्ट करने की कोशिश की (आयत 15)। (2) परन्तु जंगल में वह स्त्री स्वतन्त्र थी, अजगर के वश से बाहर थी (12:9-11)। आयत 14 कहती है कि वह ''सर्प की पहुंच से बाहर'' थी (NIV)। (3) जंगल ''परमेश्वर द्वारा तैयार की गई'' जगह थी (आयत 6); यही वह जगह थी, जहां परमेश्वर उसकी सहायता कर सकता था। (4) 6 से 14 आयतें विशेष रूप से ज़ोर देती हैं कि जंगल में उसे पाला गया: 3-1/2 वर्ष परीक्षा, कठिनाई और परख के समय स्त्री को पाला गया। कठिन समयों में परमेश्वर ने उसकी देखभाल की। (5) यह सब प्रतिज्ञा किए हुए उस स्वर्गीय देश में पहुंचने की तैयारी थी। जहां परमेश्वर ''उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा'' (21:4क)।

स्त्री के जंगल में भाग जाने को टीकाकार विशेष अवसर कहते हैं, जब मसीही लोग

सताव अथवा मृत्यु से बचने के लिए भागते थे, जो आमतौर पर छिपने का स्थान होता था। कई तो यह भी कहते हैं कि जब रोमी सेना ने यरूशलेम का विनाश किया तो मसीही लोग यरदन के पार प्राचीन पेला में भाग गए। अन्य तहखानों, मांदों और गुफाओं की और पृथ्वी के दुर्गम स्थानों में जाने की बात कहते हैं, जहां मसीही लोगों को आश्रय मिला।

आत्मिक प्रासंगिकता बनाना और भी उपयुक्त होगा; यदि आप मसीही हैं, तो आप संसार के किसी भी भाग में रहते हों, ''तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'' (कुलुस्सियों 3:3)। आपको ''*स्वर्गीय स्थानों* '' में सब प्रकार की आत्मिक आशीष मिली है (इफिसियों 1:3)। परमेश्वर ''अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी'' करता है (फिलिप्पियों 4:19)। जंगल का संकेत पूरे प्रकाशितवाक्य में बताई गई सच्चाई पर फिर से ज़ोर देता है कि परमेश्वर अपनों के लिए[8] विशेष प्रबन्ध करता है, और उनकी देखभाल करता है।

इस बात का कि स्त्री भाग गई अर्थ यह नहीं है कि शैतान हार मानने को तैयार था। एक बार मैंने एक स्त्री के विषय में पढ़ा था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह हर किसी के बारे में अच्छा ही कहती थी। एक पुराने बदमाश के बारे में वह उलझन में पड़ गई थी, परन्तु उसने अन्त में टिप्पणी की कि वह सीटी बजा सकता है। एक दिन किसी ने उसे शैतान के बारे में कुछ अच्छा कहने की चुनौती दी। वह सोचती रही, सोचती रही और फिर बोली, ''वह जिद्दी है!'' शैतान सचमुच जिद्दी है, और कलीसिया को सताने की उसकी जिद्द आयत 15 में दिखाई गई है: ''और सांप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुंह से नदी की नाईं पानी बहाया, कि उसे इस नदी से बहा दे''।

आइए पहले दिखाई नाटकीय शृंखला में वापस देखते हैं, स्त्री के दूर भागने पर शैतान ने फुर्ती से उसका पीछा किया और देखता रहा कि वह कहां जाकर रुकी है। उस जगह पहुंचने पर, स्पष्टतया वह वहां प्रवेश नहीं कर पाया, परन्तु इससे वह पीछे नहीं हटा। उसके पास उसे ढूंढ़ निकालने की वैकल्पिक योजना थी । उसका बड़ा सा मुंह खुलने और उसमें पानी का बड़ा बहाव निकलने की कल्पना करें।[9] ऐसा लग रहा होगा, जैसे पानी कभी बन्द नहीं होगा। यह नदी के फूट निकलने की तरह था।

जब मेरा परिवार ऑस्ट्रेलिया में था, तो एक टोली (जिसमें हमारे बच्चे भी थे) ने रात झाड़ी में एक गहरी तंग घाटी में बिताई।[10] कैम्प से आने-जाने का एक ही मार्ग घाटी पर ढलानदार चढ़ाई ही थी। कैम्प लगाने के बाद मैंने नदी के किनारों पर घाटी के सब ओर लगे गोंद वाले वृक्ष देखे। पेड़ों के ऊपर बाढ़ के कूड़े को देखकर मैं भयभीत हो गया, जो इस बात का प्रमाण था कि अधिक देर नहीं हुई जब घाटी पानी में डूबी थी। तुरन्त मुझे अपनी अति सक्रिय कल्पना से हमारे छोटे से कैम्प पर कीचड़ की मोटी परत का नज़ारा दिखाई दिया। उस रात, तेज़ पानी के शोर को सुनते हुए यह योजना बनाते हुए कि आपात स्थिति आने पर अपने परिवार को कैसे निकाल सकता हूं, मैं अधिक सो नहीं पाया। बहुत बड़ी बाढ़ की बात बहुत परेशान कर सकती है।[11]

बाढ़ों और पानी चढ़ने की आकृतियां पुराने नियम में अत्यधिक बुराई के लिए कई

बार इस्तेमाल हुई हैं (अय्यूब 27:20; भजन संहिता 18:4; 32:6; 42:7; 69:1, 2, 15; 124:2-5; यशायाह 8:5-8)। अध्याय 12 वाली बाढ़ अजगर के *मुंह* से आई थी, जिस कारण हमें पहले तो शायद आरम्भिक मसीहियों को आघात पहुंचाने और नष्ट करने के लिए इन *शब्दों* को मानना होगा:[12] उनके बारे में झूठी बातें जिस कारण उन्हें सताव झेलना पड़ा, उन्हें विश्वास से हटाने के लिए बनाई गलत बातों से मिल जाने के लिए उन पर दबाव पाने के लिए धमकी भरी बातें कीं। पहली शताब्दी में शैतान ने कलीसिया के विरुद्ध इन्हीं ढंगों का इस्तेमाल किया और वह आज भी करता है। झूठ की निरन्तर बाढ़ प्रिंटिंग प्रैसों, रेडियो और टेलीविज़न पर वक्ताओं के मुख से और मंचों से निकलता है। झूठ का यह वही सैलाब है, जो प्रभु की कलीसिया को डुबोने के लिए है।

अजगर की सामर्थ पर विचार करते हुए, हम फिर पूछते हैं, ''वह स्त्री बच कैसे पाई?'' फिर वही उत्तर है, ''केवल प्रभु की सहायता से।'' आयत 16 उसके हस्तक्षेप के बारे में बताती है: ''परन्तु पृथ्वी ने उस स्त्री की सहायता की, और अपना मुंह खोलकर उस नदी को जो अजगर ने अपने मुंह से बहाई थी, पी लिया।''[12] ऐसे वाक्यांश से हमें निर्गमन की दो और घटनाएं याद आती हैं: जब परमेश्वर इस्राएलियों को लाल समुद्र में से ले गया था (भजन संहिता 66:6 KJV) और जब पृथ्वी ने मुंह खोलकर शत्रुओं को *निगल* लिया था (गिनती 16:31-33)। इस दृश्य की कल्पना करें: पानी की बहुत ऊंची दीवार स्त्री के ऊपर गिरती हुई देखें। पृथ्वी के कांपने को और इसके तल में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ती देखें। बाढ़ के बहते झरने को बिना किसी को हानि पहुंचाए पृथ्वी के अंदर जाने को देखें। एक बार फिर स्त्री निश्चित मृत्यु से बच गई थी!

लेखक इस तथ्य में महत्व को ढूंढ़ते हैं कि ''पृथ्वी'' ने बाढ़ को निगल लिया। कुछ लोग सुझाव देते हैं कि ''पृथ्वी'' यहां प्राकृतिक प्रबन्ध को कहा गया है, यानी परमेश्वर ने इस संसार का प्रबन्ध इस तरीके से किया है कि उसकी सृष्टि उसके लोगों की रक्षा करती है।[13] इस तथ्य पर विचार करते हुए कि प्राकृतिक संसार पाप से भ्रष्ट हो गया है और प्राकृतिक संसार द्वारा ही कई बार मेरा शरीर कुरेदा गया, कटा, रौंदा गया और टूटा भी, मैं उस विचार से सहमत नहीं हूं। अन्यों का विचार है कि ''पृथ्वी'' यहां ''पृथ्वी वासियों'' को कहा गया है, जिसका इस्तेमाल पूरे प्रकाशितवाक्य में अविश्वासियों के लिए किया गया है। यह सच है कि पृथ्वी वासी शैतान के झूठों को (बिना संदेह किए मान लेते हैं), परन्तु यह देखना कठिन है कि इससे मसीही लोगों को वैसे लाभ होता है। जितना संसार शैतान के झूठों को मानेगा, उतना ही अविश्वासी लोग परमेश्वर के लोगों को सताएंगे।

सम्भवतया और सामान्य प्रासंगिकता बनाई जानी चाहिए; आयत 16 उन नाटकीय क्षणों को दिखाती है, जब परमेश्वर ने अचानक अपने लोगों की ओर से हस्तक्षेप किया। ऐसा ही एक अवसर वह था, जब शाऊल नामक व्यक्ति मसीही-लोगों से घृणा करने वाला व्यक्ति दमिश्क की ओर जा रहा था। शाऊल ने कलीसिया पर सताव की नदी बहा दी थी, जिससे कलीसिया के अस्तित्व को ही खतरा बन गया था। वह उसमें कैसे बच सकती थी? उत्तर था, ''परमेश्वर के हस्तक्षेप से।'' दमिश्क के मार्ग पर जब यीशु ने शाऊल को दर्शन

दिया, तो ऐसा लगा जैसे पृथ्वी ने अपना मुंह खोल कर कलीसिया के प्रति उसकी शत्रुता को निगल लिया था।

सम्मान करने के परमेश्वर के प्रबन्ध के कई उदाहरण जोड़े जा सकते हैं[14] हैनरी स्वेट ने उस समय के परमेश्वर के प्रबन्ध के उदाहरण दिए, जब रोम कलीसिया पर सताव कर रहा था:

> सहायता अनापेक्षित कोनों से आई; सताव करने वाले सम्राट की मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी द्वारा नीति परिवर्तन, जन भावना का अचानक घोर परिवर्तन, या कलीसिया से लोगों का ध्यान हटाने वाली ताज़ा घटनाएं, समय-समय पर शैतान की योजनाओं पर नजर रखतीं या रुकावट डालतीं।[15]

13 से 16 आयतों को एक-एक करके देखने के बाद अब समय है पीछे को मुंह कर उन्हें पूरी तरह देखना। हर बात पर हमारी सहमति हो या न, परन्तु हम इस पर अवश्य सहमत हो सकते हैं कि इन आयतों में बताया गया है कि चाहे जितनी भी कोशिश कर लें, शैतान कलीसिया को कभी नष्ट नहीं कर सकता! राज्य/कलीसिया की भविष्यवाणी करते हुए दानिय्येल ने कहा कि यह ''अनन्तकाल तक न टूटेगा'' और ''सदा स्थिर रहेगा'' (दानिय्येल 2:44)। अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा करते हुए, यीशु ने कहा कि ''अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)।

अविश्वासियों की फाइलों में तो कलीसिया के निधन की सूचना बहुत लम्बे समय से पड़ी है और उस दिन की प्रतीक्षा में है। कलीसिया की निकट मृत्यु की घोषणा बार-बार हुई है। बार-बार यह दावा किया जाता है कि ''कलीसिया अपनी अन्तिम सांसें गिन रही है।'' परन्तु वचन में यहां ऐलान है कि गिनती के दिन तो शैतान और उसके अनुयायियों के रह गए हैं। परमेश्वर की कलीसिया तो अविनाशी है!

कलीसिया के विरुद्ध लड़ाई में शैतान की विजय कभी नहीं हो सकती।

लड़ाई जो शैतान कई बार जीत जाता है (12:17)

दुख की बात है कि शैतान कई बार कलीसिया के निजी सदस्यों के विरुद्ध लड़ाई जीत *जाता* है। हां, मुझे मालूम है कि कलीसिया निजी सदस्यों से बनती है, और यहून्ना भी यह जानता था। परन्तु हमें यह बात समझनी आवश्यक है कि कलीसिया तो अविनाशी है, परन्तु इसके सदस्य अभेद्य नहीं हैं। ''ऐसे ही'' कलीसिया और सदस्यों के बीच अन्तर आयत 17 में देखा जाता है: ''तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उसकी शेष[16] संतान[17] से, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया।'' इस आयत में ''स्त्री'' कलीसिया है, जबकि ''उसकी संतान'' मसीही लोग अर्थात कलीसिया के लोग हैं।

आयत 17 इस व्याख्या को पूरा कर देती है कि अजगर नाराज़ क्यों था। पुरुष बालक के उसके हाथ से निकल जाने पर वह निश्चय ही बहुत परेशान था। पृथ्वी पर फैंके जाने पर वह ''बड़े क्रोध'' से भर गया (12:12)। स्त्री के पंख लगने पर उड़ जाने पर उसकी परेशानी बढ़ गई थी। जब पृथ्वी ने (जहां से उसके कार्य संचालित होते थे) उसके विरुद्ध

होकर उसे हरा दिया तो उसके बर्दाश्त से बाहर हो गया। आश्चर्य की बात नहीं कि उसे ''क्रोध में आया'' दिखाया गया है!

शैतान क्या करता है

शैतान पूरी कलीसिया का नाश नहीं कर सकता, इसलिए वह कलीसिया के सदस्यों को एक-एक करके चुनता है:[18] ''और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष संतान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया''[19] (आयत 17क) इस अध्याय में मसीह पहली ''संतान'' था और मसीही लोग ''उसकी *शेष* संतान।''[20] धर्मशास्त्र में मसीह के अनुयायियों को उसके भाई-बहन बताया गया है (लूका 8:21; रोमियों 2:29; इब्रानियों 2:11)।

आयत 17 में ''लड़ने को'' वाक्यांश को रेखांकित कर लें। हम यहां धक्का मारने या छोटी-मोटी झड़प की बात नहीं कर रहे, बल्कि हम तो युद्ध की बात कर रहे हैं। हमें नष्ट करने के लिए शैतान अपना पूरा ज़ोर लगा देगा। यूहन्ना के समय में यह शारीरिक सताव पर, जिसमें मसीही लोगों को मारा डाला जाना था। परन्तु इस बात को समझें कि शैतान की युद्ध नीति में मसीही लोगों की हत्या अपने आप में लक्ष्य नहीं था। परमेश्वर की विश्वासी संतान में से जिसे भी वह मारता, उसका प्राण परमेश्वर के पास चला जाता है, जहां वह उसकी पहुंच से बाहर हो जाता है। नहीं, शैतान का हथियार तो ''*मृत्यु* का भय'' (इब्रानियों 2:15) था। मसीही लोगों को धमकाने की कोशिश करने और अपने प्रभु का इनकार करवाने के लिए उसने मृत्यु की *धमकी* का इस्तेमाल किया।

इस कारण मुझे यह ज़ोर देना आवश्यक है कि ''लड़ाई करने को'' वाक्यांश में शारीरिक पीड़ा या मृत्यु की बात हो भी सकती है और नहीं भी। शैतान का मुख्य उद्देश्य हमें शारीरिक रूप से नष्ट करना नहीं, बल्कि आत्मिक रूप से नष्ट करना है। युद्ध के उसके तरीके हमारी निजी शक्तियों और निर्बलताओं को ध्यान में रखकर अलग-अलग होते हैं। शैतान को हमारी कमज़ोरियों का पता है (देखें याकूब 1:14) और वह उनका शोषण करता है! कई मसीही दबाव में आ जाते हैं, कई शारीरिक परीक्षाओं के समाने हार मान लेते हैं और अन्य झूठी शिक्षाओं को संदेह की नज़र से देखते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ''शैतान का हम पर दांव न चले,'' हम ''उसकी युक्तियों से अनजान'' नहीं रह सकते (2 कुरिन्थियों 2:11)।

हमें क्या करना चाहिए

हमें नाश करने की शैतान की मजबूरी पर विचार करते हुए, हम दिन-रात किए जाने वाले हमलों में कैसे बचे रह सकते हैं? यह केवल प्रभु की सहायता से हो सकता है। मूसा के शब्द आज भी उतने ही उपयुक्त हैं, जितने उस समय थे जब ये कहे गए थे: ''तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो, ... न डर और न भयभीत हो; क्योंकि तेरे संग चलने वाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा'' (व्यवस्थाविवरण 31:6)।

दूसरी ओर, आराम से बैठकर हम सब कुछ करने के लिए प्रभु की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। वह हमसे हमारे योगदान की अपेक्षा करता है। परिचय में यह ज़ोर देने के लिए कि हम युद्ध कर रहे हैं, हमने इफिसियों 6 का इस्तेमाल किया था। वही आयतें यह भी बताती हैं कि उस युद्ध में हमें अपना बचाव कैसे करना है।

> निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन कर और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, ... (इफिसियों 6:10-18)।[21]

''विश्वास की ढाल'' वाक्यांश पर विशेष ध्यान दें। अपनी पहली पत्री में यूहन्ना ने उनकी बात की थी जिन्होंने ''उस दुष्ट पर जय पाई है'' (1 यूहन्ना 2:13); फिर उसने बताया कि वह जय कैसे पाई जा सकती है: ''वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है'' (1 यूहन्ना 5:4ख; देखें आयत 5)।

प्रकाशितवाक्य 12 के अन्त में ज़ोर है कि विजयी विश्वास कैसे दिखाया जाना चाहिए; स्त्री की ''संतान'' ''परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते[22] और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं'' (आयत 17ख)। हमें *आज्ञाकारी* होना आवश्यक है (मत्ती 7:21; यूहन्ना 14:21, 23; इब्रानियों 5:8, 9; 1 यूहन्ना 2:3)। यीशु ने अपने चेलों को बताया था, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)।

इसके अलावा *हालात के बावजूद* हमारे लिए आज्ञाकारी होना आवश्यक है। प्रकाशितवाक्य 12:17 में ''स्थिर'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है, जिसमें ''यीशु की गवाही देने पर *स्थिर*'' रहने की बात है। चाहे जो भी हो जाए, हमें छोड़कर नहीं जाना हैं। हमें स्थिर रहना है। यह इतना आसान भी नहीं है। सांसारिक युद्ध करने वाले सिपाहियों को कभी-कभी युद्ध की ड्यूटी से राहत मिल जाती है परन्तु मसीही लोग तो दुष्ट की सेनाओं के ''निशाने'' पर ही रहते हैं।

> हां, परमेश्वर के लिए काम करना कठिन है,
> पृथ्वी के इस युद्ध स्थल पर
> उठकर उसका भाग लेना,
> कभी-कभी हिम्मत हारना नहीं![23]

चाहे कितना भी कठिन हो, हमें चाहिए कि ''अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है'' (इब्रानियों 10:23)। आइए दाऊद के साथ कहें ''... परमेश्वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूंगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?'' (भजन संहिता 56:4)।

सारांश

प्रत्येक पाठ की तैयारी करते हुए मैंने कई टीकाओं तथा अन्य पुस्तकों में से पढ़ा। अध्याय 12 पर डब्ल्यू. बी.वेस्ट की टिप्पणियों के अन्त में आकर मुझे हंसी आ गई। कई घंटे तक मैंने अलग-अलग लेखकों की टिप्पणियों को पढ़ा था, जिन्होंने इस अध्याय की कठिनाइयों तथा जटिलताओं पर ज़ोर दिया था, परन्तु वेस्ट का कहना था, ''यह आसानी से समझ आने वाला अध्याय है।''[24] मुझे ''आसानी से समझ आने वाला'' शब्दों की सकारात्मक धुन अच्छी लगती है। हो सकता है कि मैं वेस्ट जितना शांत न होऊं, परन्तु मैं इससे सहमत हूं कि इसकी मुख्य बातें स्पष्ट हैं:

(1) हम युद्ध कर रहे हैं, एक वास्तविक युद्ध यानी ऐसा युद्ध जो सबसे शक्तिशाली शत्रु के साथ है।

(2) उस युद्ध को जीतने के लिए, हमें अपना पूरा ज़ोर लगाना पड़ेगा।

(3) अन्ततः जीत केवल यीशु के लहू के द्वारा ही हो सकती है।

अध्याय के मुख्य शब्दों को कभी न भूलें: ''और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस [शैतान] पर जयवन्त हुए'' (12:11क)।

अन्त में मुझे तीन प्रश्न आप से पूछने चाहिए: (1) क्या आपको अहसास है कि आप युद्ध में लगे हुए हैं? (2) जीत पाने के लिए क्या आप पूरी कोशिश कर रहे हैं? (3) क्या आपने भरोसा रखकर आज्ञा मानने से मेमने के लहू से अपने आप को मिला लिया है?[25] यदि आपने प्रभु की बात नहीं मानी है तो इसे कल के लिए न टालें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का एक और शीर्षक ''विश्वास की अग्नि परीक्षा'' होगा। यह जानने के लिए कि वह विश्वास असली है या नकली, उसे आग में परखा जाना अच्छा है। कई बार दिखने में बहादुर लगने वाले आग में टूट जाते हैं, जबकि कमज़ोर लोगों को शक्ति के गुप्त संसाधन मिलते हैं और वे बहुत साहस दिखाते हैं।

मैरिल टैनी ने अध्याय 12 की समीक्षा तीन " f " अर्थात। The Foe, The Fight , The Finish से की है।[26]

(कई लेखकों द्वारा सुझाया गया) शीर्षक ''तीन बार हारा हुआ'' इस्तेमाल किया जा सकता है! गलतियां दोहराने वालों को हतोत्साहित करने के लिए अमेरिकी दण्ड संहिता है कि गम्भीर अपराधों के लिए तीसरी बार दोषी ठहरने वाला स्वत: ही जेल में जाता है।''तीन

बार हारना'' निजी असफलता को दर्शाता है। अध्याय 12 में शैतान तीन बार (अपने प्रयासों में असफल रहा) हार गया।

टिप्पणियां

[1]इस पुस्तक में ''अपने शत्रु को जानें'' पाठ देखें। [2]आपको चाहिए कि उस सताव की समीक्षा करें जो पहली शताब्दी में कलीसिया पर आया था और जो आने वाला था। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-6'' में ''आगे भी जारी'' पाठ देखें। [3]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''कब तक, हे प्रभु'' पाठ देखें। यदि आप इस तुलना को निर्गमन तक बढ़ाना चाहें तो यह उल्लेख कर सकते हैं कि निर्गमन के दौरान फिरौन को बाद में ''अजगर'' कहा गया (यशायाह 51:9)। [4]उकाबों के पंखों का रूपक यशायाह 40:31 में और साधारण अर्थ में इस्तेमाल किया गया। [5]आपको चाहिए कि इस पाठ के भाग के रूप में जंगल में चालीस वर्षों के घूमने की समीक्षा करें। [6]यह अजीब वाक्यांश कष्ट के समय को बताने के लिए पहले दानिय्येल में इस्तेमाल किया गया था (दानिय्येल 7:25; 12:7)। [7]पहले आए पाठों ''क्या हम नाप में पूरे हैं'' और ''परमेश्वर के गवाह'' में ''3-1/2 वर्ष'' की चर्चा देखें। [8]आयत 14 में ''उस जगह'' वाक्यांश पर ध्यान दें। परमेश्वर की योजनाओं और प्रबन्धों में कलीसिया की विशेष ''जगह'' है। [9]संकेतों की तरलता (अर्थात संकेतों के बदलने का ढंग) यहां दिखाई गया है: 12:3 में अजगर को सात सिरों वाला दिखाया गया है, परन्तु आयत 15 में उसे एक मुंह वाला दिखाई गई है। [10]ऑस्ट्रेलिया में ''झाड़ी'' जंगल अर्थात तटीय नगरों के बाहर अविकसित क्षेत्रों को कहते हैं।

[11]यदि आप इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो आपको सम्भवतया ऐसी किसी बात का उदाहरण का विकल्प देना चाहिए, जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों और जिससे बहुत हानि हुई हो। [12]यह हो सकता है कि बाद मसीही लोगों पर लाई जाने वाली हर बुराई को कहा गया हो। [13]यह सत्य है कि सब जगह सब कुछ परमेश्वर के हाथ में है (देखें भजन संहिता 148) और यह उसका इस्तेमाल अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कर सकता है। इसलिए यह सम्भव है कि आयत 16 में ''पृथ्वी'' का संकेत उस विचार को आगे देने के लिए हो। [14]आप अपने अनुभव से या अपने क्षेत्र से ऐसा उदाहरण दे सकते हैं जब कलीसिया के लिए चीज़ें परन्तु फिर किसी अप्रत्याशित स्रोत से सहायता मिल गई। [15]हैनरी बी. स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैम्ब्रिज: मैक्मिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., तिथि नहीं), 159. [16]KJV में "the remnant" है, परन्तु यूनानी में केवल ''शेष'' है (देखें NKJV)। [17]मूल यूनानी धर्मशास्त्र में ''उसका वंश'' है (देखें KJV)। [18]यह वाक्य रूबल शैली, *द लैंब एंड हिज़ एनिमी: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983), 75. से लिया गया था। [19]12:17 में आपको ''उसकी संतान'' वाक्यांश पर जोर देना चाहिए। [19]शैतान की नज़र मसीही लोगों पर है। उसे गैर मसीही लोगों से लड़ाई करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे तो पहले ही उसकी ओर हैं, चाहे उन्हें इसका अहसास हो गया हो या न। शैतान अपना ध्यान यीशु के विश्वासियों को नष्ट करने में लगाता है। [20]कुछ टीकाकार ''उसकी शेष संतान'' को मसीही लोगों के चुने हुए समूह के लिए बताने का काफी प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए यह मानने वाले कि यहूदी आज भी परमेश्वर के विशेष लोग हैं, जोर देते हैं कि ''उसकी शेष संतान'' अन्य जाति मसीहियों को कहा गया है परन्तु संदर्भ में, ''जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही में स्थिर हैं।''

[21]इन आयतों में शैतान को भगाने के तरीके बताते कई सुझाव हैं। समय निकाल कर आप विस्तार में इस पर विचार कर सकते हैं। होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 280. [22]सैवंथ डे-एडवेंटिस्ट तथा पुरानी व्यवस्था के कुछ भाग या पूरी व्यवस्था को मानने की वकालत करने वाले अन्य लोग इससे संतुष्ट हो जाते हैं कि नये नियम में आयत 17 जैसी आयतों में

''आज्ञाएं'' दस आज्ञाओं को ही कहा गया है। वे दो सच्चाइयों को नजरअंदाज़ करते हैं: (1) दस आज्ञाओं को शेष पुरानी वाचा के साथ ही क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया है; (2) दस आज्ञाओं के अलावा और आज्ञाएं भी हैं। इस पर चर्चा के लिए देखें अल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइम्ली मैसेजस फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 63 में उद्धत. [24]डब्ल्यू बी.वेस्ट जूनि. *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासेस,* संपा. बॉब प्रिचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 90. [25]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को बताएं कि मसीही बनने के लिए या परमेश्वर के भटके हुए बालक को घर वापसी के लिए क्या करना आवश्यक है। इस पुस्तक के पाठ ''दो गवाह'' में टिप्पणी 40 देखें। [26]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 62-64.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आप तेज हो रहे आत्मिक युद्ध से अवगत हैं? क्या आपको लगता है कि हर कोई इससे अवगत है?
2. पाठ के अनुसार 12:13-17 वाली स्त्री किसका प्रतिनिधित्व करती है?
3. यहूदियों के जंगल में चालीस वर्ष घमूने की समीक्षा करें। 12:14, 16 में उकाब के पंख, पाला जाने और पृथ्वी के खुलने के हवाले समय के उस काल से कैसे मेल खाते हैं?
4. ऐसे कौन से कुछ ढंग हैं, जिनसे आज परमेश्वर सुरक्षित स्थान में हमें पालता है?
5. क्या आप सहमत हैं कि शैतान आज भी ''अपने मुंह की बाढ़'' से कलीसिया को डुबोने (प्रभावित करने) की कोशिश कर रहा है?
6. पाठ में सुझाव दिया गया कि पृथ्वी के खुलने का रूपक इस तथ्य को दिखाता है कि परमेश्वर कई बार नाटकीय रूप से और अनापेक्षित ढंग से अपने लोगों की ओर से हस्तक्षेप करता है। ऐसे किसी और हस्तक्षेप के बाइबल के किसी उदाहरण का ध्यान आपके मन में आता है? क्या आप ऐसे आधुनिक उदाहरणों पर विचार कर सकते हैं?
7. क्या शैतान कलीसिया को कभी नष्ट कर सकता है? क्यों?
8. शैतान इतना क्रोध में क्यों है? वह एक-एक मसीही को नष्ट करने पर इतना उतारू क्यों है? वह आपका नाश करने पर उतारू क्यों है?
9. कलीसिया ''पूरी'' तो अविनाशी है ही, क्या आप भी हैं?
10. क्या शैतान एक-एक सदस्य की कमज़ोरी को जानता है? क्या वह उनका शोषण करने का प्रयास करता है? तो फिर क्या यह आपके लिए आवश्यक है कि अपनी कमज़ोरियों से अवगत हों?
11. शैतान का सामना करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?
12. जो कुछ हम कर सकते हैं वह सब करने के बाद प्रभु पर निर्भर रहना कितना आवश्यक है?

स्त्री को सताते हुए अजगर (12:13-16)